दिनांक 08.07.74 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

बाप और बच्चों के मिलन का अलौकिक मेला
सर्व सम्बन्धों का प्यार देता शिव बाबा अकेला

मधुर मिलन की ये विशेषता कहीं और ना पाई
हर आत्मा सागर के कंठे पर मिलन मनाने आई

सर्व सम्बन्धों से जो बच्चे बाप से मिलन मनाते
सर्व प्राप्तियों के अधिकारी वही बच्चे कहलाते

आत्म स्मृति जगाकर तुम नष्टोमोहा बन जाओ
निराकारी निरहंकारी और निर्विकारी कहलाओ

अमृत वेला के मिलन का बाप समाचार सुनाते
भिन्न भिन्न पोज़ और पोजीशन बच्चे अपनाते

क्लियर लाइन वाले बच्चे ही सम्पर्क जोड़ पाते
बहुत से बच्चे सम्पर्क जोड़ने में ही समय गंवाते

मिलन ना होने पर बच्चे दिल शिकस्त हो जाते
कुछ बच्चे बाप को छोड़कर माया से बतियाते

आलसी और अलबेले बच्चों को माया सताती
अमृत वेला वरदान के समय बदला लेने आती

अनेक अर्जियां बाप के आगे बच्चे लेकर आते
कभी तो करते शिकायत कभी तो महिमा गाते

भिन्न भिन्न पंक्तियों में बच्चे बाप के पास आते
कोई मांगते सहयोग और कोई उलहना भी सुनाते

बच्चों की ये हालत देखकर बाप यही समझाते
क्यों ना खुद को तुम मास्टर नॉलेजफुल बनाते

मास्टर सर्वशक्तिमान् की स्टेज पर बैठ जाओ
संशय की हर प्रश्नावली अपने मन से मिटाओ

बाप से मिलन मनाने में अपना समय लगाओ
सर्व सम्बन्धों का रस इस मेले में बाप से पाओ